चतुर्थ तत्त्वार्थसूत्र व्याख्यानशाला

(प्रतिवेदन)

दिनांक 04 दिसम्बर से 15 दिसम्बर 2019 तक

उमास्वाती द्वारा लगभग द्वितीय-तृतीय शताब्दी के मध्य विरचित ''**तत्त्वार्थाधिगमसूत्र**' जैन दर्शन एवं मान्यताओं का आधारभूत ग्रन्थ है। इसमें ईसवी पूर्व कई सौ वर्षों से विरचित हो रहे विशाल जैन आगम-वाङ्मय का आलोडन करके सूत्र शैली में उसके सार का दस अध्यायों में एक व्यवस्थित रूप में उपस्थापन किया गया है। विदेशी विद्वानों ने उसे '**जैन बाइबिल**' की संज्ञा प्रदान की है।

बी. एल. इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी ने अपनी नियमित वार्षिक प्राकृत कार्यशाला के आयोजन के अतिरिक्त इस ''**तत्त्वार्थसूत्र**'' का नियमित अध्यापन भी अपने कार्यक्रम में सम्मिलित किया है जो पिछले दो वर्षों से आयोजित हो रहा है।

इस कार्यशाला का प्रवेश शुल्क 500/- रु. है जिसमें पाठ्य पुस्तक, रजिस्टर एवं स्टेशनरी, बैग तथा आवास एवं भोजन सभी सम्मिलित है। यह पाठ्यक्रम 10 दिनों का है किन्तु प्रारम्भ एवं अन्त में एक-एक दिन उद्घाटन एवं समापन सत्र के लिये निर्धारित हैं। उद्घाटन सत्र के दिन ग्रन्थ तथा ग्रन्थाकार का परिचय देकर विषय प्रवेश कराया जाता है, समापन सत्र में मुख्यत: प्रमाणपत्रों का वितरण होता है।

कार्यशाला आरम्भ होने के पूर्व यह विचार विमर्श किया गया कि प्रतिभागियों को तत्त्वार्थसूत्र की कौन सी टीका या अनुवाद दिया जाना चाहिये। अपने पुस्तकालय में तत्त्वार्थसूत्र के समस्त संस्करण देखकर निदेशक महोदय ने श्री सुभद्रमुनि द्वारा की गई व्याख्या को अत्यन्त सुगम, बोधगम्य तथा विद्वत्तापूर्ण पाया। सौभाग्य से **डॉ. सुभद्रमुनि** उन दिनों दिल्ली में ही रोहिणी क्षेत्र के एक जैन उपाश्रय में विराजमान थे। जब बी. एल. इन्स्टीट्यूट के अधिकारियों द्वारा वहाँ जाकर उनसे इस कार्यशाला के विषय में निवेदन किया गया और बताया गया कि हम उनके द्वारा की गई व्यवस्था को ही पाठ्यक्रम में रखना चाहते हैं तो वे बहुत प्रसन्न हुए और 500 रु. मूल्य की अपनी पुस्तक की 50 प्रतियाँ हमको नि:शुल्क भेंट कर दीं जिससे अपने इन्स्टीट्यूट का बहुत व्यय बच गया।

इस वर्ष का यह कार्यक्रम, अर्थात् तत्त्वार्थसूत्र का व्याख्या सहित गम्भीर अध्यापन दिनांक 04 दिसम्बर से 15 दिसम्बर, 2019 तक चला जिसका लाभ 15 प्रतिभागियों ने लिया। हमारे सौभाग्य से इन दिनों परिसर में पूज्या साध्वीश्री सुव्रताश्री जी म., साध्वीश्री सुयशा जी म., सुप्रज्ञाश्री जी म., साध्वीश्री श्री दिव्यज्योति जी म. एवं साध्वीश्री समता जी उपस्थित थीं जिन्होंने प्रतिदिन सम्पूर्ण समय तक अध्यापन कक्ष में बैठकर ग्रन्थ का विवेचन सुना। वे उद्घाटन एवं समापन सत्र में भी उपस्थित रहीं और अपने आशीर्वचन प्रदान किये।

कार्यशाला का उद्घाटन दिल्ली वि.वि. में दर्शन विभाग के अध्यक्ष **प्रो. श्री बालगणपति देवरकोंडा** ने किया और सत्र की अध्यक्षता श्री राजकुमार ओसवाल जी, अध्यक्ष बी.एल.आई.आई. ने की। श्री आत्मवल्लभ जैन स्मारक शिक्षण निधि के सचिव **श्री अशोक जैन** भी उपस्थित रहे और

उन्होंने स्मारक के स्वरूप एवं इसमें चल रही गतिविधियों का परिचय दिया। श्री देवरकोण्डा जी ने जैनदर्शन के त्रिरत्नों - सम्यक् ज्ञान, सम्यग् दर्शन एवं सम्यक् चारित्र को आधुनिक दृष्टान्तों द्वारा समझाते हुए इसकी महत्ता पर बल दिया। **श्री राजकुमार ओसवाल जी** ने बी.एल. इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी देते हुए जैन दर्शन और प्राकृत के क्षेत्र में इसकी उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

मुख्य में प्रो. जे.बी.शाह, प्रो. देवरकोंडा, प्रो. गयाचरण त्रिपाठी, श्री राजकुमार ओसवाल, प्रो. अशोक कु सिंह, अशोक जैन

श्री राजकुमार जैन ओसवाल जी बोलते हुये

प्रो. बालगणपति देवकोण्ड का सम्बोधन

प्रो. जितेन्द्र भाई शाह बोलते हुये

तत्त्वार्थसूत्र में 10 अध्याय हैं और प्रतिदिन प्रातः 9:30 से लेकर सायं 5:00 बजे तक एक-एक अध्याय का अध्यापन होता है। इस बार हमारी प्रार्थना पर हमें निम्न विद्वान् अध्यापन हेतु उपलब्ध हुए -

1. **प्रो. जितेन्द्र भाई शाह**, अहमदाबाद - इन्होंने उद्घाटन सत्र में दो बीज-व्याख्यानों के अतिरिक्त प्रारम्भ के दो अध्याय (1-2) तथा एक अध्याय (9) अर्थात् कुल तीन अध्यायों का अध्यापन किया।
2. **श्री केतन भाई शाह**, अहमदाबाद न दो अध्याय (3-4) पढाए।
3. **प्रो. कमलेश कुमार जैन**, जयपुर ने अध्याय पांच (5वां) पढ़ाया।
4. **प्रो. धर्मचन्द जैन**, जयपुर ने भी दो अध्यायों (6-7) की व्याख्या प्रस्तुत की।
4. **प्रो. डॉ. अशोक कु. सिंह**, बी. एल. इन्स्टीट्यूट ने दो (8 एवं 10) अध्याय पढ़ाए।

इस प्रकार इन पाँच अध्यापकों ने सम्पूर्ण विस्तृत व्याख्या सहित अध्यापन किया जो अत्यन्त सफल रहा। इनके अलावा प्रो. गयाचरण त्रिपाठी, निदेशक, बी.एल. इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, ने ग्रीक दार्शनिक सम्प्रदायों पर एक अतिरिक्त व्याख्यान दिनांक 14.12.2019 को भोजनोपरान्त दिया।

श्री आत्मवल्लभ जैन स्मारक तीर्थ के एक न्यासी की विगत रात को मृत्यु के कारण दिनांक 15 दिसम्बर 2019 को सौप्रस्थानिक समारोह बहुत सादे ढंग से करने का निश्चय हुआ। फिर भी हमारे विद्वत्समुदाय और समाज के पर्याप्त लोग उसमें उपस्थित हुए। इस अवसर पर समरोह की मुख्य अतिथि संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, की पूर्व विभागाध्यक्ष **प्रो. दीप्ति एस. त्रिपाठी** ने अपने आशीर्वाद सहित समस्त प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये और भविष्य के अभिलेख एवं स्मृति हेतु एक ग्रुप फोटोग्राफ भी खींचा गया।

प्रो. दीप्ति एस. त्रिपाठी एवं श्रीमती. सुमन त्रिपाठी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र भेंट करते हुये।

इस अध्ययनशाला के **निवास** एवं **भोजन** आदि की उत्तम व्यवस्था श्री आत्मवल्लभ जैन स्मारक शिक्षण निधि के महासचिव **श्री नरेन्द्र कुमार जैन** द्वारा की गई और और इस हेतु समस्त व्यय भी उनके द्वारा वहन किया गया जिस कृपा के लिये यह बी. एल. इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी उनका आभारी है।

ग्रुप फोटोग्राफ

***